(Provisional Translation)

प्रधानमंत्री शिनजो अबे द्वारा वक्तव्य

शुक्रवार, 14 अगस्त, 2015

मंत्रिमंडल निर्णय

युद्ध की समाप्ति की 70वीं वर्षगांठ के अवसर पर, हमें युद्ध की ओर ले जाने वाले मार्ग, युद्ध समाप्त होने के बाद हमारे द्वारा चुने गए मार्ग, और 20वीं सदी के बारे में चिंतन करना चाहिए। हमें इतिहास से सबक लेकर अपने भविष्य की रूपरेखा बनानी चाहिए।

सौ से अधिक साल पहले, दुनिया भर में अधिकांश उपनिवेश बस्तियों पर मुख्य रूप से पश्चिमी देशों का कब्जा था। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बेमिसाल वर्चस्व होने के कारण 19वीं सदी में औपनिवेशिक शासन की लहर एशिया की ओर अग्रसर हुई। इसमें कोई संदेह नहीं कि इससे उत्पन्न हुई विकट स्थिति से निपटने के लिए जापान ने आधुनिकीकरण की दिशा में कदम बढ़ाया। जापान एशिया में पहला राष्ट्र था जिसने संवैधानिक सरकार का गठन किया और जापान ने अपनी स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाए रखा। जापान-रूस युद्ध ने एशिया से अफ्रीका तक औपनिवेशिक शासन के अधीन रह रहे अनेक लोगों को प्रेरणा दी।

विश्व युद्ध-I, जिसने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया था, उसके बाद स्वतंत्रता अभियान को गति मिली और औपनिवेशीकरण पर लगाम लगी। यह एक भयानक युद्ध था, जिसमें लगभग एक करोड़ लोग मारे गए। इससे लोगों में शांति की प्रबल इच्छा पैदा हुई जिसने *लीग ऑफ नेशन्स* को जन्म दिया, और परिणामस्वरूप युद्ध का त्याग करने की आम संधि अस्तित्व में आई। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में युद्ध का बहिष्कार करने की नई लहर जागृत हुई।

प्रारंभ में, जापान भी अन्य राष्ट्रों के नक्शे कदम पर चला। लेकिन व्यापक मंदी के चलते और पश्चिमी देशों द्वारा औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था को लागू करके आर्थिक ब्लॉक बनाए जाने से जापान की अर्थव्यवस्था को जबरदस्त धक्का लगा। जापान पूरी तरह से अलग-थलग पड़ गया और उसने बल प्रयोग द्वारा अपने कूटनीतिक और आर्थिक गतिरोध से निपटने का प्रयास किया। इसकी घरेलू राजनैतिक प्रणाली इन प्रयासों को रोकने में नाकाम रही। इस तरह जापान दुनिया के रूख को समझने में नाकाम रहा।

मनचूरियन घटना, और उसके उपरांत *लीग ऑफ नेशन्स* से हटने के बाद जापान ने खुद को धीरे-धीरे नई अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था, जिसे अंतर्राष्ट्रीय समुदाय भारी कीमत चुकाकर स्थापित करना चाहता था, उस के खिलाफ एक चुनौती के रूप में परिणत कर लिया। जापान ने गलत मार्ग चुना और वह युद्ध के पथ पर बढ़ चला।

और, सत्तर साल पहले, जापान पराजित हो गया।

युद्ध समाप्ति की 70वीं वर्षगांठ के अवसर पर, मैं स्वदेश और दुनिया, दोनों में मारे गए लोगों की आत्माओं के समक्ष अपना शीश श्रद्धा से झुकाता हूँ। मैं बेहद दुखी मन से अपनी भावनाएं व्यक्त करता हूँ और उन्हें तहे दिल से श्रद्धांजलि देता हूँ।

युद्ध के दौरान, हमारे तीस लाख से अधिक देशवासियों की जानें चली गईः युद्ध के मैदान में अपनी मातृभूमि और अपने परिवारों की खुशहाली के भविष्य की चिंता करते हुए; युद्ध के बाद दूर-दराज के देशों में अत्यधिक ठंड या गर्मी में, भूख और बीमारी से जूझते हुए! हिरोशिमा और नागासाकी में परमाणु बम विस्फोट; टोक्यो और अन्य शहरों पर हवाई हमलों, और ओकिनावा की जमीनी लड़ाई में सैनिकों के अलावा बड़ी संख्या में आम नागरिक निर्दयता से मारे गए।

इसके अलावा, जिन देशों ने जापान के खिलाफ युद्ध लड़ा था, उनके भी असंख्य युवाओं, जिनका भविष्य उज्ज्वल था, उनकी भी जानें चली गई। चीन, दक्षिण-पूर्व एशिया, प्रशांत द्वीप समूह और हर कहीं, जहां भी युद्ध का मैदान बना, अनगिनत मासूम नागरिक युद्ध और भुखमरी जैसी कठिनाइयों का शिकार हो गए। हमें यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिए कि युद्ध के मैदान में कई महिलाएं भी थीं जिनके सम्मान और गरिमा को भारी क्षति पहुंची।

हमारे देश ने मासूम लोगों को अथाह नुकसान और पीड़ा पहुंचाई है। इतिहास निष्ठुर है। जो कुछ हुआ उसे बदला नहीं जा सकता। इनमें से हर किसी का अपना जीवन था, उनके सपने और प्यारा परिवार था। मैं जब भी इसके बारे में सोचता हूँ तो अभी भी खुद को मूक पाता हूँ और मेरा हृदय बेहद दुःख और पीड़ा से भर उठता है।

आज जो अमन-शांति मौजूद है वह ऐसे ही क़ीमती बलिदानों पर आधारित है। और इसमें ही युद्ध के बाद के जापान का मूल स्वरूप निहित है।

हमें भविष्य में युद्ध की विभीषिका को कभी नहीं दोहराना चाहिए।

घटना, आक्रामकता या युद्ध, चाहे कुछ भी हो - हम अंतर्राष्ट्रीय विवादों का समाधान करने के उपाय के रूप में किसी प्रकार की धमकी या सैन्य शक्ति का भविष्य में कभी प्रयोग नहीं करेंगे। हम औपनिवेशिक शासन का हमेशा के लिए त्याग करेंगे और दुनिया भर में सभी लोगों की स्वतंत्रता के अधिकार का सम्मान करेंगे।

युद्ध के लिए गहरे पश्चाताप से भरकर जापान ने यह प्रतिज्ञा की थी। इसी आधार पर हमने विधि के नियम का पालन किया और एक स्वतंत्र और लोकतांत्रिक देश का निर्माण किया है। हम इसके लिए हमेशा प्रतिबद्ध रहेंगे कि कभी युद्ध नहीं करेंगे। हमें गौरव है कि हम पिछले सत्तर सालों में एक शांति प्रिय राष्ट्र के रूप में अपना सफर तय करते आए हैं और हम इस बात के लिए प्रतिबद्ध हैं कि इस प्रतिज्ञा से कभी विमुख नहीं होंगे।

जापान ने युद्ध के दौरान अपनी सैन्य कार्रवाई के लिए बार-बार हृदय से गहरा पश्चाताप व्यक्त किया है। ठोस कार्रवाई के रूप में इस भावना को प्रकट करने के लिए हमने एशिया में अपने पड़ोसी देशों: दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों जैसे इंडोनेशिया और फिलीपीन्स और ताइवान; कोरिया और चीन गणराज्यों आदि के निवासियों के दु:ख और पीड़ा को अपने दिलों में अंकित किया है; और हमने युद्ध के बाद से इस क्षेत्र में शांति और समृद्धि के लिए खुद को सतत् रूप से समर्पित किया है।

हमारे पूर्व मंत्रिमंडल द्वारा व्यक्त यह स्थिति भविष्य में भी अक्षुण्ण रहेगी।

परन्तु, हम जितना भी प्रयास क्यों न कर लें, जिन परिवारों ने अपने सदस्यों को खोया है, और जिन्होंने युद्ध की त्रासदी को झेला है, उनके दु:ख-तकलीफ और दुखद यादों को कभी नहीं मिटा पाएंगे।

इसलिए, हमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

यह सत्य है कि युद्ध के बाद एशिया-प्रशांत क्षेत्र के विभिन्न भागों से साठ लाख जापानी लोग देश वापस लौट आए और जापान के युद्ध के बाद पुनर्निर्माण के लिए एक प्रेरक शक्ति बन गए; यह भी सत्य है कि चीन में रह रहे लगभग तीन हजार जापानी बच्चों का पालन-पोषण वहीं हुआ और उन्होंने अपनी मातृभूमि पर फिर से कदम रखा; और यह भी वास्तविकता है कि अमेरिका, ब्रिटेन, नीदरलैंड, आस्ट्रेलिया और अन्य राष्ट्रों के पूर्व युद्ध बंदी, मारे गए लोगों की आत्माओं की शांति की प्रार्थना के लिए वर्षों से जापान आते रहे हैं।

युद्ध की त्रासदी को झेलने वाले चीनी लोगों और भूतपूर्व युद्ध बंदियों, जिन्होंने जापानी सेना द्वारा पहुंचाई गई असहनीय पीड़ा को सहन किया होगा, के लिए यह कितना अधिक भावात्मक संघर्ष रहा होगा, जिन्होंने इस सब के बावजूद सहिष्णु बनने के लिए इतना अधिक प्रयास किया?

इसलिए हमें इन सब बातों पर विचार करना चाहिए।

इसी सहिष्णुता के कारण जापान युद्ध के बाद के काल में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में लौट सका। युद्ध के समाप्त होने की 70वीं वर्षगांठ के अवसर पर जापान उन सभी राष्ट्रों और लोगों, जिन्होंने सुलह के लिए हर संभव प्रयास किया, उनके प्रति हृदय से अपनी कृतज्ञता अर्पित करना चाहता है।

जापान में, युद्ध के बाद की पीढ़ी की आबादी आज अस्सी प्रतिशत से अधिक हो गई है। हम अपने बच्चों, पोते-पोतियों, और आने वाली पीढ़ी, जिनका इस युद्ध से कुछ लेना-देना नहीं था, उनकी नियति में माफी मांगना नहीं लिख सकते। फिर भी, हम जापानियों को, पीढ़ी दर पीढ़ी, इतिहास का प्रत्यक्ष रूप से सामना करना चाहिए। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम अपने अतीत की विरासत को पूरी विनम्रता के साथ स्वीकार करें और उसे भावी पीढ़ी को सौंपें।

युद्ध के बाद हमारे माता-पिता और दादा-दादी की पीढ़ी ने ध्वस्त हो चुकी इस धरती पर बेहद गरीबी में जीवन यापन किया। उन्होंने जो भविष्य संजोया, वह हमारी वर्तमान पीढ़ी को विरासत में मिला है और इसे हम अपनी अगली पीढ़ी को सौंपेंगे। यह हमारे पूर्वजों के अथक प्रयासों से ही संभव हुआ है, यह इसलिए भी संभव हुआ क्योंकि अमेरिका, आस्ट्रेलिया और बड़ी संख्या में यूरोपीय देशों, जिनके साथ जापान ने शत्रु के रूप में भयानक युद्ध लड़ा था, उन्होंने हमसे घृणा न करते हुए सद्भावना का परिचय दिया और हमें सहायता प्रदान की।

हमें इसे भविष्य में पीढ़ी दर पीढ़ी सौंपना होगा। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हमें इतिहास से सीखे गए सबक को अपने दिलों में कहीं गहरे में संभालना होगा ताकि एक बेहतर भविष्य बन सके और एशिया और दुनिया में शांति और समृद्धि के हर संभव प्रयास किए जा सकें।

हम अतीत के उन पलों को अपने हृदय में अंकित रखेंगे, जब जापान सेना के साथ अपने गतिरोध को भंग करने का प्रयास किया था। इसे ध्यान में रखते हुए जापान इस सिद्धांत का हमेशा दृढ़ता से पालन करेगा कि किसी भी विवाद को विधि के नियम का सम्मान करते हुए, शांतिपूर्वक और कूटनीतिक ढंग से सुलझाया जाना चाहिए, न कि सैन्य बल के प्रयोग द्वारा, तथा दुनिया में अन्य देशों को भी ऐसा करने के लिए कहता रहेगा। चूंकि जापान एकमात्र ऐसा देश है जिसने युद्ध के दौरान परमाणु बम की विभीषिका को झेला है, अत: अप्रसार संधि को लागू करने और परमाणु हथियारों को पूरी तरह समाप्त करने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए वह अपनी जिम्मेदारी को पूरा करेगा।

हम अतीत के उन पलों को अपने हृदय में अंकित रखेंगे, जब 20वीं सदी में युद्ध के दौरान अनेक महिलाओं के सम्मान और गरिमा को चोट पहुंचाई गई थी। इसे ध्यान में रखते हुए जापान ऐसा देश बनना चाहता है जो ऐसी महिलाओं के पक्ष में खड़ा रहे। जापान 21वीं सदी में दुनिया का नेतृत्व करेगा जिसमें महिलाओं के अधिकारों का उल्लंघन न हो।

हम अतीत के उन पलों को अपने हृदय में अंकित रखेंगे, जब आर्थिक ब्लॉक बनाने से विवाद उत्पन्न हो जाते थे। इसे ध्यान में रखते हुए जापान एक ऐसी मुक्त, न्यायपूर्ण और खुली अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का निर्माण करने के लिए प्रयास करता रहेगा जिसमें किसी एक राष्ट्र की मनमानी का दबाव न हो। हम विकासशील देशों को सुदृढ़ करने में सहायता देंगे और दुनिया को और समृद्ध बनाने की दिशा में नेतृत्व करेंगे। समृद्धि शांति का आधार है। जापान गरीबी से लड़ने के लिए भी व्यापक प्रयास करेगा, जो हिंसा को उकसाने के रूप में कार्य करती है, और दुनिया के सभी लोगों को चिकित्सा सेवाएं, शिक्षा और आत्म-निर्भरता के अवसर उपलब्ध कराएगा।

हम अतीत के उन पलों को अपने हृदय में अंकित रखेंगे, जब जापान अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के लिए एक चुनौती बन गया था। इसे ध्यान में रखते हुए जापान मौलिक मूल्यों, जैसे स्वतंत्रता, लोकतंत्र और मानवाधिकार का दृढ़ता से पालन करेगा तथा ऐसे अन्य देशों के साथ सहयोग करेगा जो इन मूल्यों का

सम्मान करते हैं, “शांति के लिए सक्रिय योगदान देने” का परचम लहराएगा, तथा दुनिया में शांति और समृद्धि के लिए पहले से अधिक योगदान देगा।

इस युद्ध की 80वीं, 90वीं और 100वीं वर्षगांठ की ओर बढ़ते हुए, हम अपने लोगों के साथ मिलकर ऐसा ही एक जापान बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

14 अगस्त, 2015
शिनजो अबे, प्रधानमंत्री, जापान